PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-26 VOLUME-7 MPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 अक्तुबर–दिसंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

7

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com

19.प्रेम विवाह की व्यंग्य छटाएँ 65
–डॉ.मीना सुतवणी 65
20.पंजाब के लेखक गोपाल शर्मा फिरोजपुरी कृत कहानियों का मूल्यांकन 68
–डॉ0 सरोज बाला 68
21.कृष्णदत्त पालीवाल की साहित्य के सरोकार विषयक आलोचना दृष्टि 71
–नवनीत 71
22.भारतीय नवजागरण और रामविलास शर्मा 74
–प्रीति मिश्रा 74
23.कला साधना 78
–डॉ. सारिका बाला मिश्रा 78
24.झारखण्ड के महिला कलाकारों के कथा–साहित्य में दलित विमर्श 81
–दीपिका कुमारी 81
25.अज्ञेय की कविताओं में व्यंग्य 83
–डॉ0 सुनीता 83
26.छूटती धरती : बिखरता जीवन (गुरूबचन सिंह के कथा साहित्य के संदर्भ में) 86
-पल्लवी कुमारी निषाद, ... 86
27.रेणु की कहानियों में आंचलिकतावादी संसार का यथार्थ बिम्ब 90
-रवीन्द्र कुमार 90
28.भारत मे जाति व्यवस्था 93
-अनिलकुमार हनुमानदास गुप्ता 93
29.गिरिपार लोक कथाओं में लोक जीवन 96
-दिनेश कुमार 96
30.उ0प्र0 के बरेली मण्डल की ग्रामीण बेरोजगारी उन्मूलन में स्वर्ण जयन्ती ग्राम्य स्वरोजगार योजना की भूमिका का अवलोकन 98
[1]संगीता सक्सेना, [2]डॉ0 अनुराग अग्रवाल 98

खुली एवं चिकित्सक
के अंतिम दशक की
यंत चुस्त बन पड़ी
ता और चुस्ती के
य की विशेषताओं
हैं– "अपने लेखन
दिखाई देते हैं।
हरे जाकर चुभता
चेचार के साथ हैं
ोकधारी नहीं।"[16]
न की रचनाएँ

सुरेश माहेश्वरी,
पृ. 243 (2)
खेकर, पंचशील
वही, पृ. 134
सम्मेलनों के
पृ. 126 (8)
की कहावतें),
(12) वही (ये
(पुणतांबेकर
वा. पाटील,
पृ. 29 (14)
बेकर (डॉ.
दक– डॉ.
माहेश्वरी,
2002, पृ.

20.पंजाब के लेखक गोपाल शर्मा फिरोजपुरी कृत कहानियों का मूल्यांकन

–डॉ॰ सरोज बाला
असिसटेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग,
एस.एल.बावा डी.ए.वी. कॉलेज, बटाला– गुरदासपुर,

21वीं शताब्दी में पंजाब के प्रतिष्ठित एवं संवेदनशील लेखक गोपाल शर्मा फिरोजपुरी द्वारा लिखित 'हरे भरे शहर में' कहानी–संग्रह का प्रकाशन सन् 2007 में हुआ जिसमें सोलह कहानियाँ निहित हैं। इन कहानियों का वर्ण्य–विषय आधुनिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, भ्रान्तियाँ, गली–सड़ी रूढ़ियाँ, नारी की अवहेलना, शोषण, दुराचार, यौन–शोषण, समाज के पीड़ित, शोषित और कमज़ोर वर्ग के दुःखों एवं विपदाओं को उजागर करना है। इसके अतिरिक्त लेखक द्वारा इन कहानियों में नारी एवं युवा–पीढ़ी की नई सोच को भी प्रतिपादित किया गया है। यहाँ पर उक्त कहानी–संग्रह से चयनित कहानियों का मूल्यांकन किया जा रहा है।

लेखक द्वारा रचित **'जन्म कुण्डली'** कहानी में पढ़ी–लिखी बेटी और उसकी विधवा माँ की 'जन्म कुण्डली' को लेकर हुई वार्तालाप में नई सोच एवं गली–सड़ी रूढ़ियों की टकराहट प्रदर्शित होती है। कहानी में बखूबी बताया गया है कि 'जन्म कुण्डली' को सुखी वैवाहिक जीवन का आधार मानने वाले माँ–बाप अपने बच्चों के लिए आए कई बढ़िया रिश्ते छोड़ देते हैं और दूसरी तरफ 'जन्म कुण्डली' के आधार पर जीवन के दुख–सुख बताने वाले पण्डित अपने बच्चों की तो सही–कुण्डली बना नहीं पाते तो औरो का भविष्य क्या बनाएँगे क्योंकि ईश्वर ने जो मनुष्य का भाग्य–निर्माण कर दिया है, उसे कोई बदल नहीं सकता। कहानी में लीला कहती है कि "अम्मा" की तरह के और भी लोग हैं। अकेली अम्मा नहीं। अधिकांश लोग शंकाग्रस्त हैं। चुनौतियों से दो हाथ करने को तैयार नहीं। कर्तव्य नहीं, किस्मत के सहारे जीना चाहते हैं। संघर्ष से कतराते हैं। समय की परीक्षा करना नहीं चाहते हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं। हानि से डरते हैं। लाभ के पर्वत पर चढ़ना पसन्द करते हैं। आहिस्ता–आहिस्ता जीवन–यात्रा का रथ खींचना नहीं चाहते, पांव उड़न खटोला लेकर उड़ना चाहते हैं।"[1]

उक्त परिच्छेद से उद्घाटित होता है कि अधिकांश लोग कर्तव्य निष्ठ न होकर जन्म कुण्डली में पण्डितों द्वारा अंकित भाग्य रेखाओं के सहारे जीवन जीना चाहते हैं। वे भविष्य

को बोध वर्तमान में प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं ताकि भविष्य में उन्हें किसी मुश्किल या संघर्ष का सामना न करना पड़े। इसलिए वे पण्डितों के पास अपना आगामी समय बदलने के उपाय करवाते हैं जो सब व्यर्थ हैं क्योंकि मनुष्य ने जो बोया है, वह उसे काटना ही पड़ता है। दुख–सुख जीवन का आधार हैं जो प्रत्येक मनुष्य–जीवन में आते–जाते हैं। इन सबका मुकाबला हिम्मत और धैर्य से करना पड़ता है। सर्वशक्तिशाली परमात्मा के लेख को कोई नहीं टाल सकता । कोई पण्डित चाहे जितने भी शास्त्र पढ़कर जन्म–कुण्डलियों के निर्माण करता हो, परन्तु वह ईश्वर नहीं बन सकता। जन्म–कुण्डली मिलाने के चक्कर में लीला के लिए आए पढ़े–लिखे लड़कों के रिश्ते छूटते जाते हैं और बेटी के विवाह की चिंता माँ को दिन–रात सताती रहती है। कहानी में लीला कहती है "परम्पराएँ अपनी जगह है अम्मा और रूढ़ियाँ अपनी जगह, रूढ़ियों का त्याग मुझे हितकर लगता है।" लीला की नयी सोच उन रूढ़ियों का खण्डन करती है जो जीवन में केवल दुःख–दर्द, अपमान एवं शोषण को ही जन्म देती हैं और उन परम्पराओं को उचित मानती है जो हमें हमारी संस्कृति, सभ्यता एवं मनुष्यता से जोड़ती हैं। लेखक की यह कहानी पाठक वर्ग को कर्मशील होने और गली–सड़ी रूढ़ियों का त्याग कर जीवन में व्याप्त संघर्षो का सामना करते हुए उसे सुखी बनाने का संदेश देती है।

'राजीनामा' कहानी में लेखक ने प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण बड़े स्वाभाविक ढंग से किया है। तेजासिंह के स्कूटर के नीचे आकर गुरमेल सिंह की मुर्गी मर जाती है जिसपर गुरमेल सिंह की पत्नी तेजासिंह को बहुत बुरा–भला कहती है। तेजासिंह मुर्गी का मूल्य भी देना चाहता है परन्तु वह इसे भी स्वीकार नहीं करती है। अपने पति गुरमेल सिंह के घर आने पर उसे राई का पहाड़ बनाकर बातें बताती है जिस कारण वह तेजासिंह से झगड़ा करने उसके घर पहुँच जाता है। दोनों अपने झगड़े को पुलिस तक पहुँचा देते हैं। सर्वप्रथम तेजासिंह पुलिस के पास जाकर गुरमेल सिंह के विरुद्ध पर्चा लिखवा देता है जिसके लिए उसे संतरी से लेकर थानेदार तक को रिश्वत देनी पड़ती है। इस भ्रष्टाचार का जीवंत उदाहरण द्रष्टव्य है –

तेजासिंह थाने के गेट पर रुका। उसने संतरी से पूछा, साहिब अंदर हैं? /हाँ! संतरी ने उत्तर दिया।/क्या काम है? संतरी फिर बोला/किसी के खिलाफ रपट लिखवानी है। तेजा बोला।/साहिब ने अंदर आने के लिए मना किया है।/दस का नोट तेजा ने संतरी को दिया।/जाओ, संतरी ने तेजा को अंदर जाने को कहा।/तेजा सिंह द्वार लांघ कर थानेदार के बिल्कुल समीप चला गया। लो मेरी रपट हुजूर। तेजा सिंह ने विनती की। हमारे सिर पर चढ़कर लिखवाएगा रपट। पीछे हट कर बात कर। थानेदार ने डांटा। बेचारा। तेजा पीछे हट गया बोल क्या माजरा है। थानेदार ने अकड़कर कहा। गुरमेल के खिलाफ रपट लिखवानी है। जाओ मुंशी के कमरे में/निकाल क्या है तेरे पास। मुंशी ने कहा/तेजा ने कागज़ बढ़ाया।/यह तो हुई रपट, पर नामा कहाँ है।/मैं समझा नहीं। तेजा बोला।//"क्रोध में आ गया मुंशी। वह तेजा पर बरस पड़ा। यह लो अपने कागज़ का टुकड़ा और भाग यहाँ से हम तेरे बाप के नौकर नहीं। गलती हो गई सरकार। तो निकाल नामा। तुझे नहीं पता थाने में रपटनामा चलता है उसने जेब से दो सो रूपये निकाल कर दिए। हम भिखमंगे हैं क्या? यह क्या पकड़ा रहा है। दो सौ रूपये की तो शराब की बोतल भी नहीं आती। पाँच सौ पूरा कर। तेजा सिंह ने तीन सौ के नोट और दिए।/दूसरी तरफ गुरमेल सिंह सरपंच को साथ लेकर तेजा सिंह के खिलाफ रपट लिखाने थाने जाता है।/सरपंच ने गुरमेल को स्पष्ट कहा, ला एक हज़ार साहिब की सेवा के लिए गुरमेल ने निःसंकोच सौ–सौ के दस नोट गिनकर सरपंच को दे दिए। सरपंच ने वे रुपये थानेदार को पकड़ा दिए।"[2]

उक्त संवाद से स्पष्ट है कि हमारे पुलिस कर्मचारी जो जनता के रक्षक हैं वही भक्षक बन बैठते हैं। देश के नागरिक के लिए बिना रिश्वत दिए उनसे कोई काम करवाना कितना दुष्कर है। इसलिए दोषी रुपयों के सहारे बच निकलते हैं और निर्दोष मारे जाते हैं। कहानी के अंत में पुलिस द्वारा तेजासिंह की ओर से गुरमेल सिंह को पचास रुपये का हर्जाना भरवाया जाता है और राजीनामा के दो सौ रुपये लेकर दोनों को मैत्री–भाव से रहने की हिदायत दी जाती है। इस प्रकार यह कहानी यह संदेश देती है कि लड़ाई–झगड़ों से कभी किसी का भला नहीं होता है इसलिए अहं को छोड़कर हमें मैत्री–भाव से रहना चाहिए। दो हज़ार तक की रिश्वत देकर फिर राजीनामा किया पचास रुपये मुर्गी का मूल्य देकर इसका लाभ तो रिश्वत लेने वालों को हुआ। यही अगर अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सुचेत होकर दूसरे का हित सोचते तो भ्रष्टाचारियों को रिश्वत लेने का अवसर प्राप्त न होता।

लेखक ने 'शर्मसार' कहानी में एक वैवाहिक स्त्री का माँ न बन पाने पर उलाहना सहना, पीड़ित होना यहाँ तक कि अपने पति की अवहेलना का पात्र बनना दिखाया गया है वहीं दूसरी तरफ नारी का सशक्तिकरण एवं नई सोच से ओत–प्रोत रूप भी प्रदर्शित किया गया है। "कहानी की नायिका शालिनी को

आस पड़ोस और मुहल्ले वाले बांझ कहने लग पड़े थे। सास हर वक्त ताने देती रहती थी। उसने बड़े सत्कार से कहा– माँ जी बच्चे को जन्म देना केवल औरत के हाथ में नहीं, मर्द भी तो इसके लिए जिम्मेवार है। इतने शब्दों को सुनकर बुढ़िया आग बबूला हो गई थी वह गरजकर बोली, अरे कलमुँही तो तू क्या कहती है कि मेरा बेटा हिजड़ा है– नपुंसक है।"[3] कहानी में दिखाया गया है कि हमारे समाज में औरत की सबसे बड़ी शत्रु औरत ही है। समाज हर गलत काम के लिए केवल औरत को ही दोष देता है जिनमें स्त्रियों की संख्या अधिकत्तर होती है। शालिनी के माँ न बन पाने का सारा दोष उसे ही दिया जाता है, उसके पति दिनेश को कोई कुछ नहीं कहता। यह व्यथा एवं विडम्बना केवल शालिनी की नहीं अपितु समस्त नारी–जाति की है जो माँ नहीं बन पाती। कहानी के अंत में दिखाया गया है कि दिनेश की शादी शालिनी की छोटी बहन से करने का निर्णय घर वालों की ओर से लिया जाता है ताकि दिनेश संतान का सुख भोग सके तो शालिनी भी संतान के सुख के लिए दूसरी शादी का आग्रह करती है। ससुराल वाले पूछते हैं कि तुम किससे शादी करोगी तो शालिनी उत्तर देती है कि अपने देवर से। यह उत्तर नारी–जाति के सशक्तिकरण का प्रमाण देता है। अगर पुरुष अपनी साली से शादी कर सकता है तो स्त्री अपने देवर से शादी क्यों नहीं कर सकती है। इस नई सोच को लेखक ने पाठक वर्ग के समक्ष उद्घाटित किया है। यह भी दिखाया है कि संतान न होने पर केवल स्त्री ही दोषी नहीं होती, पुरुष में भी कोई कमी हो सकती है। इस बात को समझने की समाज को आवयकता है।

'ठेकेदार' कहानी में लेखक ने धर्म के नाम पर समाज को भ्रमित कर, उनसे दान–दक्षिणा के रूप में लाखों रुपयें ऐठने के प्रचलन पर प्रकाश डाला गया है। धर्म के नाम पर लोगों से चाहे जितना पैसा निकलवा लो परन्तु किसी निर्धन की सहायता के लिए किसी के पास सौ रुपयें तक नहीं होते हैं। कहानी में सेठ धनीराम ने पूरे शहर में जगत पिता श्री विष्णु धर जी के आने का प्रचार करवाया। फिर क्या था भीरू लोग तो चाहते ही हैं कि धर्म के नाम पर कोई हमें चार बातें समझाए और हमारे सारे पाप धुल जाएँ और उनकी इसी मानसिकता का लाभ धर्म के ठेकेदार उठाते हैं और वे प्रतिदिन कई हज़ार रूपयों का ठेका करते हैं। कहानी में यह तो प्रत्यक्ष रूप में दिखाया गया परन्तु परोक्ष रूप में यह संदेष उद्घाटित होता है कि परमात्मा बाहर भटकने से प्राप्त नहीं होता अपितु अपने भीतर से ही प्राप्त होता है। **'दिशा' कहानी में एक ओर लेखक** ने इस विडम्बना पर प्रकाश डाला है कि विवाह के उपरान्त लड़की की कमाई पर उसके पति का अधिकार हो जाता है। बेटियाँ चाहकर भी अपने माता–पिता की सेवा नहीं कर सकतीं हैं। इसी कारण कहानी की नायिका दिशा गूंगी होकर जीवन व्यतीत कर रही है कि कोई लड़का उससे शादी न करे। वहीं दूसरी तरफ राजेश के माध्यम से लेखक ने युवा–पीढ़ी की बदल रही सोच को प्रदर्शित किया है कि राजेश, दिशा को आश्वासन दिलाता है कि वह दिशा के माता–पिता का विवाह के बाद भी पूरा ध्यान रखेगा।

'काली लड़की' कहानी मे लेखक ने कृष्णा नाम की लड़की, जिसका रंग काला है, उससे कोई विवाह नहीं करता परन्तु पवन जो फौज में सिपाही है, वह कृष्णा से शादी करता है। इस पर समाज के लोग पवन के पिता पर कई उलाहने कसते हैं कि जरूर बड़ा दहेज लेकर ही काली लड़की से अपने लड़के की शादी की होगी। जब कृष्णा विवाह के उपरांत अपने गुण, स्वभाव एवं सुकर्मो से सब गाँव वालों का दिल जीत लेती है तो वही गाँव वाले उसे और उसके माता–पिता को सम्मानित करते हैं। कहानी में उद्घाटित किया गया है कि अपने सद्गुणों एवं सकारात्मक मानसिकता से प्रत्येक व्यक्ति अपनी उच्च पहचान बना सकता है चाहे फिर उसका शारीरिक रंग कैसा भी क्यों न हो।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पंजाब के लेखक श्री गोपाल शर्मा फिरोज़पुरी ने अपनी कहानियों में 21वीं शताब्दी में लोगों की बदल रही सोच को प्रदर्शित करने का सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में जिन समस्याओं को उठाया है, नई सोच के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत मूल्यांकन में सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन, नारी सशक्तिकरण, भ्रष्टाचार का खण्डन, नारी की अवहेलना एवं धर्म के नाम पर पैसे ऐंठने वाले ठेकेदारों का पर्दा–फाश आदि प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला है और साथ ही युवा–पीढ़ी की नई सोच को भी उद्घाटित किया है। ये कहानियाँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। इनमें किसी कल्पना का सहारा नहीं लिया गया है अपितु जीवंतता एवं यथार्थ का गुण भली–भान्ति विद्यमान है। लेखक की प्रत्येक कहानी पाठक–वर्ग को सोचने पर विवश कर देती है कि हमे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सुचेत होना चाहिए। देश के प्रत्येक नागरिक को अपने सुकर्मो से अपने जीवन और समाज का कल्याण करना चाहिए।

संदर्भिकाः–(1) गोपाल शर्मा फिरोजपुरी, हरे भरे शहर में, दिल्ली कल्पना बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2007 **(2)** वही, पृष्ठ 20–22 **(3)** वही, पृष्ठ–86